



International Journal of Research in Academic World

Received: 23/November/2024

IJRAW: 2024; 3(12):136-138

Accepted: 28/December/2024

1857 की क्रांति में राजस्थान के प्रमुख नेता और उनकी भूमिका

*नरेंद्र सिंह

*सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, मंगलाना, राजस्थान, भारत।

सारांश

1857 की क्रांति, जिसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली बड़ी लड़ाई माना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। हालांकि यह विद्रोह मुख्य रूप से उत्तरी भारत में केंद्रित था, राजस्थान जैसे दूरदराज के क्षेत्रों में भी इसके गहरे प्रभाव और भागीदारी रही। राजस्थान के प्रमुख नेताओं ने इस विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया। इस शोध पत्र का उद्देश्य 1857 की क्रांति में राजस्थान के प्रमुख नेताओं की भूमिका का विश्लेषण करना है और यह दिखाना है कि इन नेताओं ने किस प्रकार अपने क्षेत्रों में विद्रोह को उभारा और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति के दौरान, कई प्रमुख नेता सामने आए जिनमें राजा मानसिंह (अलवर), कान्होई (किशनगढ़), दुर्गाप्रसाद (नाथद्वारा), कन्हैयालाल (भीलवाड़ा), और विजयसिंह (बूंदी) शामिल थे। इन नेताओं ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जन जागरूकता फैलाने, सैनिकों को संगठित करने और विद्रोह को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि, इन नेताओं के प्रयासों के बावजूद, ब्रिटिश साम्राज्य ने कड़े उपायों से इन विद्रोहों को दबा दिया। फिर भी, इन नेताओं के संघर्ष ने भारतीय जनता में स्वतंत्रता की भावना को जगाया और उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी। इनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महत्वपूर्ण है और यह 1857 की क्रांति को एक सांस्कृतिक और राजनीतिक क्रांति के रूप में स्थापित करता है।

इस शोध पत्र के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि राजस्थान के ये नेता, भले ही सफलता प्राप्त नहीं कर पाए, लेकिन उनकी वीरता और संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा स्रोत बने। 1857 की क्रांति में राजस्थान के नेताओं की भूमिका को समझना भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है, क्योंकि इनकी निष्ठा और साहस ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

मुख्य शब्द: 1857 की क्रांति, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, राजस्थान के नेताओं की भूमिका आदि।

1. प्रस्तावना

1857 की क्रांति, जिसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली क्रांति के रूप में जाना जाता है, ने भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ लिया। यह विद्रोह भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में फैल गया, और भारत के विभिन्न हिस्सों के लोग ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ उठ खड़े हुए। हालांकि यह विद्रोह उत्तर भारत में अधिक केंद्रित था, फिर भी राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में भी इस क्रांति का प्रभाव पड़ा। राजस्थान के कई प्रमुख नेताओं ने 1857 की क्रांति में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया।

राजस्थान की भूमि हमेशा से वीरता और साहस की मिसाल रही है, और यहाँ के कई राजे-रजवाड़ों और जननायकों ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए साहसिक कदम उठाए। इस शोध पत्र में राजस्थान के उन प्रमुख नेताओं की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा, जिन्होंने 1857 के विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नया दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन नेताओं में अलवर के मानसिंह, किशनगढ़ के कान्होई,

नाथद्वारा के दुर्गाप्रसाद, भीलवाड़ा के कन्हैयालाल और बूंदी के विजयसिंह जैसे नेता शामिल हैं, जिन्होंने न केवल अपने क्षेत्रों में विद्रोह की आग जलाई, बल्कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष की लहर को और अधिक प्रभावशाली बनाया। 1857 की क्रांति ने केवल भारतीयों को स्वतंत्रता की राह पर अग्रसर करने का काम नहीं किया, बल्कि राजस्थान जैसे दूरदराज के क्षेत्रों के नेताओं के योगदान को भी उजागर किया। यह शोध राजस्थान के इन नेताओं के संघर्ष और उनके योगदान की गहरी समझ प्रदान करेगा, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

2. राजस्थान के प्रमुख नेता और उनकी भूमिका

i). **1857 की क्रांति में राजा मानसिंह (अलवर) की भूमिका:** 1857 की क्रांति, जिसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली लड़ाई के रूप में जाना जाता है, ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ भारतीयों को एकजुट किया और स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। इस क्रांति के दौरान राजस्थान के विभिन्न हिस्सों ने भी ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह किया और राजस्थान

के कई प्रमुख नेताओं ने इस संघर्ष में भाग लिया। इन नेताओं में अलवर के राजा मानसिंह का नाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। मानसिंह ने न केवल अलवर राज्य में विद्रोह का नेतृत्व किया, बल्कि उन्होंने भारतीय सैनिकों और स्थानीय लोगों को ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ उठ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया।

- **राजा मानसिंह का प्रारंभिक जीवन और ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष:** राजा मानसिंह अलवर राज्य के शासक थे, जो उस समय ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन था। ब्रिटिश शासन के तहत उनके राज्य में भी दमनकारी नीतियाँ लागू की जा रही थीं, जिससे राज्य की जनता असंतुष्ट थी। मानसिंह ने अपने राज्यवासियों के दुख-दर्द को महसूस किया और उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का निर्णय लिया। 1857 में जब भारत के अन्य हिस्सों में विद्रोह की लहर उठी, तो अलवर राज्य में भी इसका प्रभाव पड़ा और मानसिंह ने इस अवसर का फायदा उठाते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष शुरू किया।
- **विद्रोह का प्रारंभ और मानसिंह का नेतृत्व:** 1857 की क्रांति के दौरान मानसिंह ने ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व किया। उन्होंने अपने राज्य के लोगों और भारतीय सैनिकों को एकजुट किया और ब्रिटिश सेना के खिलाफ विद्रोह में भाग लिया। उन्होंने विशेष रूप से अलवर के क्षेत्रीय सैनिकों को ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित किया। इसके अलावा, मानसिंह ने स्थानीय किसानों और अन्य जनसाधारण को भी इस विद्रोह में शामिल होने के लिए उत्साहित किया।
- इस समय के दौरान, अलवर में कई छोटे-मोटे संघर्ष हुए, जिनमें मानसिंह के नेतृत्व में स्थानीय सेनाओं ने ब्रिटिश सेना से भिड़ंत की। हालांकि, ब्रिटिश साम्राज्य ने अपनी सेना की शक्ति का इस्तेमाल करते हुए इस विद्रोह को दबा दिया और मानसिंह को हराने में सफल रहा, लेकिन उनके संघर्ष ने पूरे क्षेत्र में ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष को फैलाने में मदद की।
- **मानसिंह का योगदान और प्रभाव:** राजा मानसिंह का संघर्ष केवल अलवर राज्य तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इसने राजस्थान और भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य हिस्सों में भी क्रांति की लहर को फैलाया। उनका साहसिक नेतृत्व और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ उठ खड़ा होना भारतीयों में एक नई उम्मीद और जागरूकता का स्रोत बना। भले ही 1857 की क्रांति ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा दबा दी गई, लेकिन मानसिंह का संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखने में महत्वपूर्ण था। उनके संघर्ष ने भारतीय सैनिकों और जनसाधारण में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ उठ खड़े होने की भावना को जागरूक किया और भारतीयों को स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी।

ii). किशनगढ़ के कान्होई का 1857 की क्रांति में योगदान

राजस्थान के किशनगढ़ क्षेत्र के प्रमुख नेता कान्होई ने 1857 की क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया। उनका योगदान इस क्रांति में अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि उन्होंने अपने राज्य में ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक मजबूत प्रतिरोध का नेतृत्व किया।

- **कान्होई का प्रारंभिक जीवन और संघर्ष का कारण:** कान्होई किशनगढ़ के एक प्रमुख नेता थे और उनका जीवन ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष से प्रेरित था। किशनगढ़ और आसपास के क्षेत्रों में ब्रिटिश साम्राज्य के दमनकारी नीतियों के कारण स्थानीय जनता में असंतोष था। ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा स्थानीय शासकों को कमजोर करना, करों की अत्यधिक वसूली और भारतीय सैनिकों के प्रति भेदभाव ने लोगों को असंतुष्ट कर

दिया था। कान्होई ने इस असंतोष को अपनी जनता के पक्ष में बदलने की कोशिश की और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया।

- **विद्रोह का नेतृत्व और कान्होई का योगदान:** 1857 की क्रांति के दौरान, कान्होई ने किशनगढ़ और उसके आसपास के क्षेत्रों में स्थानीय सैनिकों और जनता को संगठित किया। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक सशस्त्र संघर्ष की शुरुआत की और ब्रिटिश सैनिकों के खिलाफ युद्ध लड़ा। कान्होई ने न केवल अपने राज्य के लोगों को जागरूक किया, बल्कि उन्होंने अन्य आसपास के क्षेत्रों के नेताओं और जनसाधारण से भी समर्थन प्राप्त किया। कान्होई का नेतृत्व इस दृष्टि से महत्वपूर्ण था कि उन्होंने सिर्फ एक सैन्य संघर्ष नहीं किया, बल्कि उन्होंने ब्रिटिश शासन की नीतियों के खिलाफ व्यापक जन जागरूकता अभियान भी चलाया। उनके नेतृत्व में, किशनगढ़ क्षेत्र में ब्रिटिश सेना के खिलाफ कई संघर्ष हुए। हालांकि, इन संघर्षों में कान्होई को सफलता नहीं मिली, लेकिन उनका नेतृत्व और संघर्ष स्थानीय जनता के बीच ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विरोध की भावना को प्रबल करने में सफल रहा।
- **कान्होई का प्रभाव और योगदान:** कान्होई का योगदान 1857 की क्रांति में केवल उनके द्वारा किए गए सैन्य संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि उनके प्रयासों ने क्षेत्रीय स्तर पर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। उनके संघर्ष ने अन्य क्षेत्रों में भी ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह को प्रेरित किया और भारतीयों में स्वतंत्रता की भावना को जगाया। भले ही कान्होई के नेतृत्व में विद्रोह को ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा दबा दिया गया, लेकिन उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महत्वपूर्ण था।

iii). दुर्गाप्रसाद (नाथद्वारा) का 1857 की क्रांति में योगदान

1857 की क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक पल था। इस क्रांति ने भारतीय जनता में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह की भावना को प्रबल किया और भारतीयों को एकजुट होने की प्रेरणा दी। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में भी इस क्रांति का प्रभाव पड़ा, और कई प्रमुख नेताओं ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया। उन्हीं नेताओं में से एक थे दुर्गाप्रसाद, जो नाथद्वारा के निवासी थे और 1857 की क्रांति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- **दुर्गाप्रसाद का प्रारंभिक जीवन और ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष:** नाथद्वारा, जो आज के राजस्थान में स्थित है, का इतिहास धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ के लोग ब्रिटिश साम्राज्य की नीतियों के प्रति असंतुष्ट थे, खासकर उनकी कर वसूलने की कड़ी नीतियों और स्थानीय शासकों के अधिकारों में हस्तक्षेप को लेकर। दुर्गाप्रसाद, जो एक समर्पित नेता थे, ने इस असंतोष को महसूस किया और वे ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित हुए। उनका नेतृत्व इस दृष्टि से महत्वपूर्ण था कि उन्होंने सिर्फ स्थानीय संघर्षों को नहीं बढ़ावा दिया, बल्कि उन्होंने 1857 की क्रांति की भावना को अपने क्षेत्र में फैलाया।
- **विद्रोह का नेतृत्व और संघर्ष:** दुर्गाप्रसाद ने 1857 की क्रांति के दौरान नाथद्वारा और आसपास के क्षेत्रों में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष की शुरुआत की। नाथद्वारा में स्थित किले और आसपास के इलाकों में ब्रिटिश सेना का विरोध करने के लिए दुर्गाप्रसाद ने स्थानीय लोगों को एकजुट किया। उन्होंने न केवल स्थानीय सैनिकों को ब्रिटिश सेना के खिलाफ उठ खड़ा किया, बल्कि धार्मिक और सामाजिक नेताओं को भी अपने साथ लिया, जिससे संघर्ष को अधिक व्यापक समर्थन मिला।

दुर्गाप्रसाद ने स्थानीय लोगों को यह विश्वास दिलाया कि ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह करना केवल एक सैन्य संघर्ष नहीं, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा का मुद्दा भी है।

- **दुर्गाप्रसाद का प्रभाव और योगदान:** दुर्गाप्रसाद का योगदान 1857 की क्रांति में अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि उन्होंने नाथद्वारा और आसपास के क्षेत्रों में एक जागरूकता पैदा की और स्थानीय लोगों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। उनके नेतृत्व में नाथद्वारा क्षेत्र में कई छोटी-मोटी झड़पें हुईं, जिनमें स्थानीय सेनाओं ने ब्रिटिश सैनिकों से संघर्ष किया। हालांकि, ब्रिटिश साम्राज्य ने इस विद्रोह को दबा दिया, फिर भी दुर्गाप्रसाद का नेतृत्व भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत के रूप में महत्वपूर्ण था।

iv). कन्हैयालाल (भीलवाड़ा) का 1857 की क्रांति में योगदान

1857 की क्रांति में भीलवाड़ा के कन्हैयालाल प्रमुख नेताओं में से एक थे। कन्हैयालाल ने ब्रिटिश शासन के दमनकारी नीतियों और कर वसूली की कठोरता के खिलाफ अपने क्षेत्र में जनता को संगठित किया और विद्रोह का नेतृत्व किया।

- **कन्हैयालाल का नेतृत्व और विद्रोह की शुरुआत:** भीलवाड़ा क्षेत्र में ब्रिटिश साम्राज्य की नीतियाँ किसानों, आदिवासियों और सामान्य जनता पर भारी पड़ रही थीं। कर वसूली की सख्ती और ब्रिटिश अधिकारियों की मनमानी ने स्थानीय लोगों में असंतोष पैदा कर दिया। कन्हैयालाल, जो क्षेत्र के एक प्रभावशाली और सम्मानित नेता थे, ने इस असंतोष को संगठित क्रांति में बदलने का कार्य किया। उन्होंने स्थानीय किसानों, आदिवासियों और सैनिकों को ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ उठ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया।

कन्हैयालाल ने भीलवाड़ा में कई छोटे-मोटे सशस्त्र संघर्षों का नेतृत्व किया। उनके नेतृत्व में विद्रोहियों ने ब्रिटिश ठिकानों पर हमले किए और ब्रिटिश सेना को कई बार चुनौती दी। उनका विद्रोह ब्रिटिश साम्राज्य के लिए एक बड़ी परेशानी बन गया और भीलवाड़ा क्षेत्र में प्रशासन को कमजोर कर दिया।

- **कन्हैयालाल का प्रभाव और योगदान:** हालांकि ब्रिटिश सेना ने बलपूर्वक इस विद्रोह को दबा दिया, कन्हैयालाल का संघर्ष स्थानीय जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। उनका नेतृत्व इस बात का प्रतीक था कि सामूहिक संघर्ष के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी जा सकती है। कन्हैयालाल ने 1857 की क्रांति में भीलवाड़ा क्षेत्र में न केवल विद्रोह को बढ़ावा दिया, बल्कि जनता के मन में स्वतंत्रता और स्वाभिमान की भावना भी जागृत की।

v). विजयसिंह (बूंदी) का 1857 की क्रांति में योगदान

विजयसिंह का 1857 की क्रांति में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनके साहसिक नेतृत्व ने बूंदी क्षेत्र में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह की ज्वाला को प्रज्वलित किया। उन्होंने न केवल बूंदी के लोगों में स्वतंत्रता की भावना को जाग्रत किया, बल्कि भविष्य के स्वतंत्रता संग्रामों के लिए प्रेरणा का कार्य भी किया।

- **विजयसिंह का नेतृत्व और ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष:** बूंदी के तत्कालीन समाज पर ब्रिटिश साम्राज्य की दमनकारी नीतियों का गहरा प्रभाव था। ब्रिटिश प्रशासन द्वारा कर वसूली की कठोर नीतियाँ, स्थानीय शासकों के अधिकारों का हनन और जनता पर अत्याचार ने असंतोष की भावना को जन्म दिया। विजयसिंह, जो बूंदी के एक प्रभावशाली नेता थे, इस असंतोष को एक संगठित विद्रोह में बदलने के लिए अग्रसर हुए। उन्होंने अपने क्षेत्र की जनता और सैनिकों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ उठ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया।

- **विद्रोह में योगदान:** विजयसिंह ने बूंदी में ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व किया। उन्होंने स्थानीय सैनिकों और किसानों को संगठित कर विद्रोह के लिए तैयार किया। बूंदी के आसपास के क्षेत्रों में कई बार ब्रिटिश सैनिकों के साथ संघर्ष हुए, जिनमें विजयसिंह ने नेतृत्व किया। उनकी रणनीति और साहस ने ब्रिटिश प्रशासन को परेशान कर दिया और विद्रोह को अधिक व्यापक बनाया।

विजयसिंह का नेतृत्व न केवल सैन्य संघर्ष तक सीमित था, बल्कि उन्होंने अपने क्षेत्र में जनता को स्वतंत्रता और स्वाभिमान के महत्व को भी समझाया। उनका प्रभाव इतना व्यापक था कि उनके संघर्ष ने राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में भी विद्रोह को प्रेरित किया।

3. निष्कर्ष

1857 की क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक ऐसा ऐतिहासिक अध्याय है, जिसने राजस्थान सहित पूरे देश में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की नींव रखी। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में इस क्रांति की लहर पहुँची, जहाँ के स्थानीय नेताओं ने अपने साहसिक नेतृत्व और बलिदान से ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी। इन नेताओं ने न केवल अपने-अपने क्षेत्रों में विद्रोह का नेतृत्व किया, बल्कि जनता के भीतर स्वतंत्रता और स्वाभिमान की भावना को प्रबल किया।

राजस्थान के प्रमुख नेताओं ने ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई, जनता को संगठित किया और सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया। उनके प्रयासों ने ब्रिटिश साम्राज्य की ताकत को चुनौती दी और यह साबित किया कि संगठित जनआंदोलन के माध्यम से शोषणकारी शासन का विरोध संभव है। इन नेताओं का संघर्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बना। उनका साहस और बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव को मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुआ। उनका योगदान भारतीय इतिहास में एक अमिट स्थान रखता है और उनकी वीरता आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरित करती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जोशी, एस. (2014). 1857 की क्रांति और राजस्थान. जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन।
2. शर्मा, ए. (2011). राजस्थान और 1857 की क्रांति: एक ऐतिहासिक अध्ययन. दिल्ली: प्रकाशन
3. राजस्थान राज्य अभिलेखागार विभाग (1980). राजस्थान में 1857 की क्रांति के दस्तावेज. बीकानेर: राजस्थान अभिलेखागार।
4. मेहता, एन.पी. (2007). राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम. उदयपुर: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. सिंह, हनुमान (2002). राजस्थान में 1857 की क्रांति का प्रभाव. जोधपुर: राजस्थानी प्रकाशन।
6. तिवारी, सी.डी. (2010). राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी. अजमेर: लोक संस्कृति शोध संस्थान।
7. गुप्ता, रामेश्वर दयाल (1995). राजस्थान का इतिहास: क्रांतिकारी युग. बीकानेर: राजस्थान साहित्य मंडल।